Artistic Narration Vol. XV No. 1 Jan.-June 2024 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

ब्रज की लोक संस्कृति एवं लोक संगीत का अध्ययन

डॉ० अनिता रानी
श्रीमती बी०डी० जैन गर्ल्स पी०जी० कॉलेज
आगरा
ईमेलः dr.anita80@gmail.com

तनु शर्मा
शोधार्थी
डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
आगरा
ईमेलः tanuparijiya@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० अनिता रानी,
तनु शर्मा

ब्रज की लोक संस्कृति एवं लोक संगीत का अध्ययन

Artistic Narration 2024,
Vol. XV, No. 1,
Article No. 15 pp. 85-90

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

भारत की संस्कृति दुनियाँ की सबसे पुरानी संस्कृति व समृद्ध संस्कृति है। भारत की एक संस्कृति में अनेकों प्रान्तों की संस्कृतियाँ समाहित हैं। अनेक भाषाओं के लोगों व अनेक धर्मों के लोगों द्वारा सदियों में इस संस्कृति का निर्माण हुआ है। जिन संस्कृतियों के समावेश से भारतीय संस्कृति का उद्भव हुआ, उन्हीं में से एक है, ब्रज की संस्कृति। ब्रज की लोक संस्कृति भारत की संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसके द्वारा हमें भारत की ऐतिहासिक समृद्धता का परिचय प्राप्त होता है। ब्रज की लोक संस्कृति के अन्तर्गत ब्रज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक पृष्ठभूमि, जातियाँ, खान–पान, निवास–स्थान, यात्राऐं, ब्रज क्षेत्र में आने वाले प्रमुख स्थान, तीज–त्यौहार, यहाँ की परम्पराएँ, यहाँ के वन तथा यहाँ का लोक संगीत आदि आता है। लोक संगीत ब्रज के जन–जीवन का अभिन्न अंग है। यहाँ की अन्य सांस्कृतिक धरोहरों की तरह, यहाँ का लोक संगीत अति प्राचीन है व जिसका संरक्षण, यहाँ के लोगों के द्वारा बहुत विश्वास व पूर्ण समर्पण के साथ किया गया है। ब्रज के लोक संगीत में ब्रज की संस्कृति पूर्ण रूप से परिलक्षित होती है। ब्रज क्षेत्र की लोक संस्कृति एवं यहाँ के लोगों का जीवन श्री कृष्ण व राधा की लीलाओं के रंग में रंगे हुए हैं जिसका प्रशव यहाँ के लोक संगीत पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। कृष्ण भक्ति के रंग का प्रभाव यहाँ सर्वत्र दिखाई देता है। श्री कृष्ण का जन्म स्थान होने के कारण यह प्रदेश देव भूमि कहलाता है। लोक संगीत यहाँ के लोगों के जीवन में पूरी तरह से रचा बसा है। जीवन का कोई भी अवसर हो, यहाँ के लोग उसे गीत–संगीत व उमंग के साथ मनाते हैं। संस्कृति एवं संगीत का मनोहर संगम यहाँ देखने को मिलता है।

मुख्य बिन्दु

संस्कृति, लोक संस्कृति, ब्रज की लोक संस्कृति, लोक संगीत, ब्रज का लोक संगीत।

संस्कृति

संस्कृति एक विस्तृत शब्द है। संस्कृति जीवन जीने की एक विधि है जिसके अन्तर्गत रीति–रिवाज, परम्पराएँ, मान्यताएँ तथा विश्वास आते है तथा इन्हीं के आधार पर जीवन को जीने का तरीका संस्कृति कहलाती है। किसी समाज में गहराई तक विद्यमान गुणों का सम्पूर्ण स्वरूप ही संस्कृति है। लेखक रामधारी सिंह दिनकर के अनुसार ''सभ्यता वह चीज़ है जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है जो हममें व्याप्त है।'' संस्कृति का सम्बन्ध मानव के आन्तरिक गुणों से है। जहाँ शैतिक वस्तुएँ हमारी सभ्यता को दर्शाती हैं वहीं हमारे संस्कार हमारी संस्कृति को दर्शाने का कार्य करते है।

लोक संस्कृति

लोक एक ऐसा शब्द है जो किसी व्यक्ति विशेष को नहीं दर्शाता बल्कि यह लोगों के सामूहिक रूप को दर्शाता है। साधारण भाषा में समुदायों के मिले–जुले रूप को लोक कहते हैं। लोक में समाहित वे सारी विशेषताएँ, जो उस लोक की पहचान कराती हैं, जैसे– आचार–विचार, खान–पान, वेश–भूषा, रहन–सहन, तीज त्यौहार, लोक मान्यताएँ, लोक कहानियाँ, विश्वास–अंधविश्वास आदि लोक संस्कृति कहलाती है। एक स्थान विशेष के लोगों द्वारा अपनाई गई जीवन शैली लोक संस्कृति कहलाती है। लोक शब्द व्यापकता को दर्शाता है एक ओर यह सम्पूर्ण विश्व का द्योतक है वहीं दूसरी ओर जन सामान्य के समूह को भी प्रदर्शित करता है। लोक के धरातल पर ही किसी संस्कृति का निर्माण होता है।

ब्रज की लोक संस्कृति

ब्रज क्षेत्र शरत के उत्तरी भाग में तथा उत्तर प्रदेश के पश्चिमी शग में स्थित है। ब्रज संस्कृति अत्यन्त समृद्ध एवं विशाल है। यहाँ के कण–कण में श्री राधा व कृष्ण के अलौकिक रूप के दर्शन होते हैं। ब्रज की लोक संस्कृति का आधार भगवान श्री कृष्ण व राधा हैं। ब्रज की लोक संस्कृति की समृध्दता के कारण ही यह शरत ही नहीं वरन् पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। इसी प्रसिध्दि के परिणाम स्वरूप भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व से पर्यटक यहाँ आते है। यहाँ की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ भगवान कृष्ण का जन्म स्थान है और यह विशेषता ब्रज को और खास बनाती है। यहाँ की छोटी–छोटी पहाडियाँ, खेत–खलिहान, गायों के झुण्ड, राधे–राधे का नाम पुकारते लोग, यहाँ के मंदिर, यहाँ के पेड़–पौधे, मंदिरों से आती हुयी घंटियों की आवाज स्वयं ही यहाँ की संस्कृति की विशिष्टता का परिचय देती है।

ब्रज की लोक संस्कृति के अन्तर्गत ब्रज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, भौगोलिक पृष्ठभूमि, जातियाँ, खान–पान, निवास–स्थान, यात्राऐं, ब्रज क्षेत्र में आने वाले प्रमुख स्थान, तीज–त्यौहार, यहाँ की परम्पराएँ, यहाँ की भाषा, यहाँ के वन, यहाँ का लोक संगीत आदि आता है। मथुरा व उसके आस–पास का क्षेत्र जैसे बरसाना, नन्दगाँव, वृन्दावन, बलदेव, गोकुल, गोवर्धन आदि, ये सभी ब्रज भूमि के अन्तर्गत आते हैं। इसके अलावा आगरा, अलीगढ़ तथा भरतपुर का कुछ क्षेत्र शी ब्रज प्रदेश में सम्मिलित है। मथुरा और उसके आस–पास के क्षेत्र को कई ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक नामों से जाना जाता रहा है। जिस स्थान को आज वृन्दावन के नाम से जाना जाता है वहाँ कभी मधुवन नाम का बहुत सुंदर वन था। मथुरा राज्य अर्थात ब्रज प्रदेश पर वर्षों तक यदुवंशियों का राज्य रहा, जिसमें श्री कृष्ण सबसे अधिक लोकप्रिय हुए। श्री कृष्ण को यहाँ सबसे प्रिय देवता माना जाता है तथा सम्पूर्ण ब्रज क्षेत्र राधा तथा कृष्ण की भक्ति में डूबे प्रतीत होते है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कृष्ण के समय में 12 वन, 24 उपवन तथा 5 पर्वतों का समावेश इस ब्रज भूमि में था, जो समय

के साथ–साथ अपने में सिमटते गये। ब्रज में सभी प्रकार की जातियाँ निवास करती हैं। यहाँ की भाषा ब्रज भाषा है जो सुनने में बहुत मधुर लगती है।

यहाँ के खान–पान के अन्तर्गत यहाँ पर दूध से बने खाद्य पदार्थ अधिक पसंद किये जाते है। यहाँ के लोग दूध, दही, खीर, कचौड़ी व कई प्रकार के पकवान खाना पसंद करते है। यहाँ के निवास स्थान दुर्गनुमा होते है, जिनकी विशालता का अनुमान घरों के भीतरी भाग में जाने पर प्राप्त होता है। लाहोरी ईटों या सीमेंट–गारा व पत्थर के बने यह मकान पुरातन व आधुनिक समय के बीच की कड़ियाँ हैं। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के तीज–त्यौहार मनाये जाते हैं। नाग पंचमी, हलषष्ठी, कृष्ण जन्माष्टमी, ऋषि पंचमी, गंगा दशहरा, होलिका दहन आदि त्यौहार विशेष हैं परन्तु होली एक ऐसा त्यौहार है। जिसे देखने व मनाने के लिए देश–विदेश से लोग यहाँ आते हैं। राधा–कृष्ण के रंग में रंगी होली का दृश्य बहुत ही मनमोहक होता है। इन त्यौहारों से जुड़ी कई ऐसी परम्पराऐं हैं जिन्हें यहाँ के लोग सदा से निभाते चले आ रहें हैं। ब्रज के प्रान्त में विभिन्न लोक कलाऐं आज शी उसी रूप में जीवन्त है जैसे हजारों वर्षों पहले थी, जैसे नवरात्रि के अवसर पर मंगल कलश की स्थापना, देवी के चित्र को दीवार पर गेरू से बनाना व कलश के चारों ओर चौक या ओम या स्वास्तिक का आलेखन, श्रावण मास में नागपंचमी के अवसर पर नाग का चित्र दीवारों पर बनाना, रक्षाबंधन के अवसर पर घर की दीवारों पर गेरू या हल्दी से सोना या सरमन आदि विभिन्न भित्ती चित्र बनाना आदि यहाँ की लोक कलाओं की विशेषता है। ब्रज की लोक कलाऐं यहाँ की संस्कृति की विशेषताओं को दर्शाती हैं।

ब्रज में समय–समय पर विभिन्न मेलों व लोकोत्सवों का आयोजन होता है जो यहाँ की संस्कृति से परिचय कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ब्रज के मेलों, त्यौहारों व लोकोत्सवों में ब्रज लोक जीवन की प्राचीन काल से चली आ रही, लोक परम्परा के दर्शन होते हैं। ब्रज में नववर्ष के प्रथम दिन यानि चैत्रमास की नवरात्रि के प्रथम दिन से ही उत्सवों व मेलों की शुरूआत हो जाती है और साल भर इन त्यौहारों व मेलों की धूम रहती है। मथुरा को ब्रज का हृदय माना जाता है तथा यहाँ के लिए कहा जाता है कि यहाँ 'सात वार और नौ त्यौहार' होते है। ब्रज में आयोजित होने वाले मेलों व लोकोत्सवों में प्रमुख हैं– कृष्ण जन्माष्टमी, राधा अष्टमी, बल्देव जन्मोत्सव, नन्दोत्सव, यमुना छट, वरसाने की होली, नन्द गाँव की होली, दीपावली, गोवर्धन पूजा, भाई दौज, रक्षाबंधन, गंगा दशहरा, मटकी लीला, टैसू–झैंझी आदि। आज ब्रज की पहचान आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में की जाती है। यहाँ पर विभिन्न ऐतिहासिक तथा आधुनिक मंदिर हैं। पूरे ब्रज क्षेत्र में पग–पग पर विभिन्न मंदिर बने हुए हैं। यहाँ का प्रत्येक मंदिर अपनी विशिष्टता लिए हुए है। इन मंदिरों में प्रतिदिन हजारों की संख्या में, देश–विदेश से लोग दर्शन करने आते हैं। ये मंदिर ही यहाँ के लोगों की आस्था का प्रतीक हैं। ब्रज प्रान्त में स्थित अनेकों मंदिरों में से कुछ प्रमुख मंदिर हैं– इस्कॉन मंदिर, काँच का मंदिर, श्री यशोदा नन्द जी मंदिर, पागल बाबा मंदिर, प्रेम मंदिर, बाँके बिहारी मंदिर, राधारानी मंदिर, रंग जी का मंदिर आदि। ब्रज यमुना नदी के किनारे पर स्थित है तथा यहाँ के लोग यमुना के प्रति विशिष्ट श्रद्धा भाव रखते है। यमुना से जुड़ी श्री कृष्ण की बाल लीलाओं के कारण यमुना के प्रति यह श्रद्धा और अधिक बढ़ जाती है। ब्रज से सम्बन्धित ये आध्यात्मिक विशेषताऐं ब्रज की सांस्कृतिक विशेषताओं को दर्शाने का कार्य करती हैं।

लोक संगीत

लोक संगीत शब्द लोक तथा संगीत दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है लोक के गीत या लोगों में प्रचलित गीत। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र के अनुसार ''जो संगीत देश, काल और जाति आदि के आधार पर स्वयं बनता है, फलता–फूलता है, वह लोक संगीत है।'' लोक संगीत किसी भी प्रकार के बन्धन को स्वीकार नहीं करता। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अनुसार ''संस्कृति का सुखद सन्देश देने वाली कला है– लोक संगीत।'' लोक संगीत किसी देश या प्रदेश अथवा किसी विशिष्ट स्थान की सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्थिति का दर्पण होता है जिसके माध्यम से उस स्थान विशिष्ट की संस्कृति की झलक देखी जा सकती है। संगीत की दो धाराएँ प्राचीन काल से ही मानी जाती रही हैं, एक मार्गी और दूसरी देशी। कालान्तर में मार्गी संगीत का लोप हो गया तथा देशी संगीत दो रूपों में विकसित हो गया, पहला शास्त्रीय और दूसरा लोक संगीत। लोक संगीत का सृजन प्राकृतिक रूप से होता है। नदी, झरने, पहाड़, पोखर–तालाब, सूर्य, चन्द्र, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, बादल, बिजली तथा व्यक्ति की आन्तरिक संवेदनाओं, सुख–दुख आदि के कारण ही लोक संगीत का जन्म होता है। लोक संगीत हजारों वर्षों से, स्वभाविक रूप से, नदी की जलधारा के समान स्वछन्द रूप से, अनवरत गति से बहता चला आ रहा है। लोक संस्कृति व लोक संगीत का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। लोक संगीत हमें किसी स्थान विशेष की लोक संस्कृति से परिचय कराने में सहायक होता है।

लोक संगीत का निर्माण और विकास व्यक्ति के हृदय और बुद्धि के परस्पर सहयोग से हुआ है। लोक संगीत मानव के बाहरी जीवन के साथ–साथ उसके मानसिक भावों के भी परिचायक होते हैं। लोक संगीत के द्वारा व्यक्ति, अपने जीवन के क्रिया–कलाप करते–करते, अपने मन में उठने वाले भावों को गीतों के द्वारा प्रदर्शित करता है। इस समय ना ही वह संगीत के शास्त्रीय नियमों के बारे में सोचता है और ना ही स्वरों में चमत्कार की बात सोचता है, वह तो भावोद्रेक के समय अपनी मस्ती में गाने लगता है। इसमें शास्त्रीय संगीत की जटिलताएँ नहीं होतीं इसीलिए यह साधारण लोगों के हृदय के समीप होता है।

ब्रज का लोक संगीत

लोक संगीत ब्रज के जीवन का एक अभिन्न अंग है। यहाँ जीवन के प्रत्येक अवसर पर लोक संगीत का आयोजन होता है। ब्रजभूमि को संगीत का केन्द्र स्थल बताया गया है। ब्रज के संगीत को दर्पण स्वरूप माना गया है जिसके माध्यम से प्राचीन संगीत का वास्तविक रूप देखा जा सकता है। लोक संगीत ब्रज के जन–जीवन का अभिन्न अंग है। ब्रज के लोक संगीत को सभी ललित कलाओं में विशेष स्थान प्राप्त है। यहाँ का लोक संगीत सभी दृष्टियों से समृद्ध है। ब्रज का लोक संगीत यहाँ के लोगों के जन–जीवन से व्यापक रूप से जुड़ा हुआ है। यहाँ का ज्यादातर संगीत यहाँ के मंदिरों की देन है। यहाँ के लोक संगीत पर श्री राधा व श्री कृष्ण का प्रशव दिखाई देता है।

ब्रज के लोक संगीत को हम कई भागों में बाँट सकते है जैसे– मानव के संस्कार से सम्बन्धित लोक गीत, भक्ति गीत, ऋतु गीत, देवी–देवताओं के गीत, श्रम गीत, खेल के गीत आदि। भारतीय परंपरा के अनुसार मानव के 16 संस्कार माने गये हैं। जिनमें से जन्म, विवाह तथा मृत्यु इन तीन संस्कारों को प्रमुख माना गया है। ब्रज के लोक संगीत के अन्तर्गत मानव के संस्कार से सम्बन्धित विभिन्न लोक गीत गाये जाते हैं जैसे– जन्म के गीत, मुंडन के गीत, कनछेदन के गीत, जनेऊ के गीत, विवाह के गीत आदि। ब्रज में बारह मास भक्ति धारा समान गति से प्रवाहित होती है। यहाँ भक्ति गीतों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार

के गीत जैसे– भजन, जस (हरियश), निरगुन, कीर्तन आदि गाये जाते है। विभिन्न देवी–देवताओं से सम्बन्धित विभिन्न गीत यहाँ की स्त्रियों द्वारा गाये जाते हैं जैसे– जात (यात्रा के गीत) रतजगे के गीत, व्रत के गीत, त्यौहार के गीत आदि। ब्रज प्रान्त में ऋतुओं का विशेष महत्व है। यहाँ पर महिलाएँ विभिन्न ऋतुओं के अनुसार लोक गीतों का गायन करतीं हैं। जैसे सावन के महीने में मल्हार, तथा फागुन के मास में होरी, रसिया, फाग आदि, इसके अलावा बारहमासा भी गीत का एक प्रकार है जिसमें पूरे बारह महीनों का वर्णन रहता है। लोक संगीत यहाँ के लोगों के दैनिक जीवन में रचा–बसा है। यहाँ पर लोग अपना दैनिक कार्य करते हुए भी लोक गीतों का गायन करते है, जैसे– सुबह उठकर बुहारने के गीत, चक्की के गीत, निरवाही के गीत, सोहनी–रोपनी के गीत, मेले के गीत आदि। यहाँ पर तीज–त्यौहारों के अवसर पर बच्चों के द्वारा विभिन्न खेल के गीत गाये जाते हैं जैसे– टेसू के गीत, झांझी के गीत, फुलेरा के गीत आदि। इन लोक गीतों के अतिरिक्त ब्रज की रासलीला, ढोला व आल्हा आदि, लोक संगीत की ऐसी कलाएँ हैं जिसके माध्यम से हमें ब्रज की संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। रासलीला एक ऐसा नृत्य है जिसमें श्री राधा व कृष्ण की मधुर लीलाओं का मंचन किया जाता है। भगवान कृष्ण की बाल लीलाओं का प्रस्तुतीकरण भी रासलीला के द्वारा किया जाता है। इसमें आध्यात्म की प्रधानता रहती है। रास का मंचन सूरदास व अष्टछाप कवियों के पदों व भजनों पर किया जाता है। ब्रज की रास लीला भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त ढोला का भी ब्रज के लोक संगीत में महत्वपूर्ण स्थान है। ढोला ब्रज का एक महाकाव्य है। जिसके अन्तर्गत वीर नल की ऐतिहासिक व पौराणिक गाथा प्रस्तुत की जाती है तथा जिसमें वीर नल की वीर गाथाओं को दर्शाया जाता है। आल्हा भी ब्रज का एक महत्वपूर्ण गीत है जिसके अन्तर्गत आल्हा व ऊदल नामक ऐतिहासिक वीरों की गाथा प्रस्तुत की जाती है। इनके अतिरिक्त ब्रज प्रान्त में स्वांग, नौटंकी आदि लोक नाट्य भी प्रचलित है। जिनका प्रस्तुतीकरण विभिन्न अवसरों पर किया जाता है। यहाँ के लोक संगीत में विभिन्न वाद्य यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है जैसे– ढोलक, मृंदग, बाँसुरी, पखावज, एकतारा, मंजीरा आदि।

निष्कर्ष

ब्रज एक ऐसा स्थान है जहाँ हमें सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा कलात्मक रूप के दर्शन प्राप्त होते हैं। ब्रज के लोक संगीत को, ब्रज की आत्मा के रूप में देखा जा सकता है। बिना लोक संगीत के ब्रज की संस्कृति का कोई अस्तित्व नहीं है। ब्रज की लोक संस्कृति को जानने के लिए यहाँ के लोक संगीत को जानना अति आवश्यक है। जितनी समृद्ध ब्रज की संस्कृति है उतना ही समृद्ध यहाँ का लोक संगीत भी है। ब्रज की लोक संस्कृति तथा लोक संगीत विभिन्न ऐतिहासिक तथा कलात्मक विशेषताओं को अपने अन्दर समाये हुए है जो मानव के अस्तित्व की पहचान कराते हैं।

संदर्भ

1. तिवारी, जया. (2005). ब्रज लोक संगीत का सौन्दर्यात्मक अध्ययन. छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालयः कानपुर।
2. कुमार, अशोक. (यमन). (2021). संगीत रत्नावली. प्रकाशक–अभिषेक पब्लिकेशनः एस0सी0ओ0 57–59 सेक्टर 17–सी चण्डीगढ़. पुनर्मुद्रण–2021. पृष्ठ **6,550.**
3. वर्मा, विमला. (1995). ब्रज की लोक कलाऐं. मुद्रक–शिवम आर्ट्सः 211, निशातगंज लखनऊ।

4. गर्ग, लक्ष्मी नारायण. (2009). ब्रज संस्कृति और लोक संगीत. प्रकाशक–संगीत कार्यालय हाथरस. प्रथम संस्करण।
5. शर्मा, श्रेया. (2018). लोक संस्कृति एवं लोक संगीत का सम्बन्ध. International Seminar on Global Falk Culture Tradition & its Reflection. Banaras Hindu university: Varanasi. Pg. **76-79.**
6. देवी, मनोरमा. (2020). ब्रज संस्कृति में लोक–प्रचलित मेले और लोकोत्सव www.allresearch journal.com.
7. ब्रज लोक संगीत के वाद्य. ब्रज का प्राचीन संगीत–शरत कोश. ज्ञान का हिन्दी महासागर www.bharatdiscovery.org.
8. ब्रज के प्रमुख लोक गीत. ब्रज का प्राचीन संगीत–शरत कोश. ज्ञान का हिन्दी महासागर www.bharatdiscovery.org.
9. ब्रज भूमि के प्रसिद्ध मन्दिर www.bhaktibharat.com.
10. संस्कृति क्या है– नयी अनुगूँज. 20 जनवरी 2021. ngoonj.wordpress.com.